Bu – यीशु के चमत्कारों की प्रारंभिक प्रतिक्रिया यूहन्ना
२:२३-२५ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु के चमत्कारों की प्रारंभिक प्रतिक्रिया यूहन्ना २:२३-२५

खोदाई: यीशु स्वयं को भीड़ के भरोसे क्यों नहीं रखते? क्या सब उसके नाम पर विश्वास करते थे? कोई नहीं? वे किस बात का जवाब दे रहे थे? उनका संदेश या उनके चमत्कार? बिस्वास के साथ इससे क्या लेना-देना?

प्रतिबिंब: कब आपने किसी पर केवल निराश होने के लिए भरोसा किया है? उस अनुभव ने आपको बाद में कैसे प्रभावित किया? समाज से दूर हुए बिना आप अपनी सुरक्षा कैसे कर सकते हैं? आपको दूसरों के अनुमोदन की कितनी आवश्यकता है? यदि हां, तो क्यों? क्या आप वन के दर्शकों को खुश करना चाहते हैं?

जब वह यरूशलेम में फसह के पर्व के समय था (यूहन्ना २:२३ अ)। यह यीशु की सेवकाई में वर्णित तीन फसह में से पहला है। पहले का उल्लेख यहाँ और यूहन्ना २:१३a में किया गया है। दूसरा योहोना ६:४ में है, जबकि तीसरा योहोना ११:५५, १२:१, १३:१, १८:२८ और 39, और १९:१४ में संदर्भित है। इनकी डेटिंग करके, हम यह निष्कर्ष निकालने में सक्षम हैं कि उनकी सार्वजनिक सेवकाई साढ़े तीन साल तक चली। सुसमाचार की परंपरा बताती है कि बैपटिस्ट के कुछ ही समय बाद येशु की सेवा शुरू हुई। लूका कहता है कि हमारा प्रभु तीस वर्ष का था जब उसकी सेवकाई आरम्भ हुई (लूका ३:२३)। यदि यीशु का जन्म ७ या ६ ईसा पूर्व की सर्दियों में हुआ होता, तो वह २९ ईस्वी में ३३ या ३४ वर्ष का होता (देखें Aq – यीशु का जन्म)। उसने संदेहवादियों को समझाने या विरोध करने वालों को मनाने के लिए नहीं, बल्कि मसीहा के आगमन का संकेत देने के लिए चमत्कारी संकेत दिखाए। उन्होंने शुभ समाचार का जवाब देने के लिए इच्छुक, तैयार दिलों को संकेत देने की पेशकश की।

बहुत से लोगों ने उन चिन्हों को देखा जो वह
दिखा रहा था और उसके नाम पर विश्वास किया (यूहन्ना २:२३बी)। वे रूप को देखकर चलते थे, विश्वास से नहीं; वे चिह्नों पर तो विश्वास करते थे, परन्तु यहोवा पर नहीं। वे

Bu – यीशु के चमत्कारों की प्रारंभिक प्रतिक्रिया यूहन्ना
२:२३-२५ | 2

उस पर विश्वास नहीं करते थे, केवल उसके नाम पर। येशु ने जो आश्चर्यकर्म किए उन्हें देखकर वे उत्तेजित हो गए, परन्तु वे अपने पाप को स्वीकार करने और पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं थे। माना जाने वाला क्रिया ऐओरिस्ट काल में है। दूसरे शब्दों में, बहुत से लोग निर्णय के एक बिंदु पर आए, लेकिन यीशु के बारे में बौद्धिक ज्ञान से विश्वास तक की रेखा को पार नहीं किया। इब्रानियों के लेखक ने इसके बारे में चेतावनी देते समय कहा: इसलिए, जैसा कि पवित्र आत्मा कहता है: आज, यदि तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि तुमने विद्रोह के समय किया था, परीक्षण के समय जंगल में, जहां तुम्हारा पिताओं ने मुझे परखा और परखा और चालीस वर्ष तक देखा कि मैंने क्या किया। इस कारण मैं उस समय के लोगों पर क्रोधित हुआ, और मैं ने कहा, उनके मन सदा भटकते रहते हैं, और उन्होंने मेरे मार्गोंको नहीं पहिचाना। इसलिथे मैं ने अपके कोप में शपय खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे। हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में से किसी का मन पापी और अविश्वासी न हो, जो जीवते परमेश्वर से फिर जाए (इब्रानियों ३:७-१२)।यहाँ पवित्र आत्मा उन इब्रानियों से कहता है जो निर्णय लेने के कगार पर थे – लेकिन उन्होंने कभी प्रतिबद्धता नहीं की थी, “अपने हृदयों को कठोर मत करो, आज सुनो और आज वह करो जो परमेश्वर तुमसे चाहता है। चालीस वर्ष तक परमेश्वर की सामर्थ और देखभाल का प्रमाण देखने के बाद भी इस्राएल के बच्चों ने जो किया वह मत करो। वे उस पर अविश्वास करते रहे। ऐसा मत करो।

लेकिन, यीशु धार्मिक नेताओं से लेकर जनता तक, किसी से भी अनुकूल प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं थे। वह अपने आप को उन्हें नहीं सौंपता था, क्योंकि वह सब लोगों को जानता था (यूहन्ना 2:24)। मानव जाति की कुल भ्रष्टता का क्या अभियोग है। इसका मतलब यह नहीं है कि खोए हुए विवेक के मामले में पूरी तरह से असंवेदनशील हैं, या यह कि मानवजाति उतनी ही पापी है जितना कि वे संभवतः हो सकते हैं। न ही इसका अर्थ यह है कि पापी हर संभव प्रकार के पाप में लिप्त होता है। लेकिन इसका मतलब यह है, और जो प्रभु ने देखा उससे प्रमाणित होता है, कि खोए हुए वास्तव में पाप के दास हैं (रोमियों ६:१-२३), और अपनी पापी स्थिति से खुद को मुक्त करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं। अदन की वाटिका में, आदम ने दिखाया कि शरीर के पीछे मनुष्य पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। जैसा कि एक अन्य ने कहा है, “मनुष्य के स्नेह को उत्तेजित किया जा सकता है, मनुष्य की बुद्धि को सूचित किया जाता है, मनुष्य की अंतरात्मा को दोषी ठहराया जाता है; लेकिन फिर भी भगवान उस पर भरोसा नहीं कर सकते। मानवजाति की देह में निंदा की जाती है और उसे फिर से जन्म लेना चाहिए। इसलिए स्वामी अपने आप को उन्हें नहीं सौंपेगा।

यहाँ पर प्रभु का उदाहरण हम सभी के लिए एक चेतावनी होना चाहिए। हमें यह याद रखना अच्छा होगा कि हर चमकती चीज सोना नहीं होती। किसी ऐसे व्यक्ति पर भरोसा करना बुद्धिमानी नहीं है जिसे आप केवल थोड़े समय के लिए जानते हैं। हमें सभी के प्रति दयालु होना चाहिए, लेकिन कुछ ही के साथ गोपनीय। दूसरे शब्दों में, क्या आप स्वयं

Bu – यीशु के चमत्कारों की प्रारंभिक प्रतिक्रिया यूहन्ना
२:२३-२५ | 3

को बहुत जल्दी दूसरों की शक्ति में डाल देते हैं? जब गलीली रब्बी ने बारह प्रेरितों को बाहर भेजा तो उसने उन्हें यह कहते हुए भोले न होने की चेतावनी दी: मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह चतुर और कबूतरों की तरह भोले बनो (मत्ती १०:१६)। मिस्र की चित्रलिपि में, साथ ही बहुत प्राचीन विद्या में, साँप ज्ञान का प्रतीक थे। उन्हें चतुर, चतुर, चालाक और सतर्क माना जाता था। उस विशेषता में, कम से कम, विश्वासियों को साँपों का अनुकरण करना चाहिए। हमें अपने चारों ओर की अविश्वासी दुनिया से निपटने में चतुर और चालाक होना चाहिए।

उसे मानवजाति के बारे में किसी गवाही की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में क्या है (यूहन्ना २:२५)। मसीहा मानव स्वभाव को जानता था। वह मानव हृदय की चंचलता और अस्थिरता को जानता था। वह चुनाव के लिए नहीं दौड़ रहा था, और उसने अपना मिशन या अपना भविष्य मानवता को नहीं सौंपा था। उसने अपने पिता पर भरोसा किया, और फिर उसने मानवता को उस पर भरोसा करने के लिए आमंत्रित किया। और नासरी निकुदेमुस में अगले ऐसे व्यक्ति के दिल को जानेंगे।